आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 अप्रैल 2014

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,115
युगाब्द-5115, अंक-82-70, वर्ष-7,
चैत्र कृष्ण पक्ष, अप्रैल -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि : 5-6 अप्रैल, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्रः 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

मयीदमिन्द्र इन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम्। अस्माकꣳ सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः॥ -यजु. १/१०

व्याख्यान– हे **"इन्द्र"** परमैश्वर्यवन् ईश्वर ! **"मयि"** मुझमें **"इन्द्रियम्"** विज्ञानादि शुद्ध इन्द्रिय **"दधातु"** धारण करो और **"रायः"** उत्तम धन को **"मघवानः"** परम धनवान् आप **"अस्मान्"** हमारे लिए **"सचन्ताम्"** सद्यः प्राप्त करो। हे सर्वकाम पूर्ण करनेवाले ईश्वर **"अस्माकम्.....सन्तु"** आपकी कृपा से हमारी आशा सत्य ही होनी चाहिए, (पनरुक्त अत्यन्त प्रेम और त्वरा द्योतनार्थ है) भगवन् ! हम लोगों की इच्छा आप शीघ्र ही सत्य कीजिए, इससे हमारी न्यायुक्त इच्छा के सिद्ध होने से हम लोग परमानन्द में सदा रहें।। ५१।।

सम्पादकीय

काश कुछ वैदिक सिद्धान्त लागू होते.....?

देश में लोकसभा के निर्वाचन का शंखनाद हो चुका है, चारों दिशाओं में राजनैतिक ऊष्मा दिखाई पड़ रही है, सार्वजनिक स्थानों पर, वाहनों में, रेलगाड़ियों में, सर्वत्र एक ही कोलाहल हैं, और हो भी क्यों न, जब लोकतन्त्र का उत्सव ही निर्वाचन माना जाता हो, और राजमहलों की ऊंची दीवारों से घिरे, मोटे परदे के पीछे, पूरे सुखमय, स्वर्गोपम वातावरण में जीवन जीने वाले अदर्शनीय क्षत्रप, राजपुरुष और राजस्त्रियां सारे सुख संसाधनों को एक ओर रखकर गांव-गांव, गली-गली निकल पड़ते हों, मान-अपमान की परवाह किये बिना, धूप-छांव, भूख-प्यास सभी कुछ एक ओर रखकर, धन हो या धनहीन, साफ-सुन्दर बस्तियां हों या मैली-कुचैली गन्दगी से अटी बस्तियां, समान रूप से, चाहे नाक पर रूमाल रखकर ही क्यों न चलना पड़े, घर-घर और द्वार-द्वार पर दस्तक देने का पूर्ण प्रयास जो करते हैं इस निर्वाचन के काल में। इन निर्वाचन प्रणाली के औचित्य-अनौचित्य की मीमांसा भी समय-समय पर होती रहती है, और भविष्य में भी अवश्य होगी ही, किन्तु इस सत्य से भी मुख नहीं मोड़ा जा सकता कि-वर्तमान में हमारी और हमारे देश की यही नियति है, और इसी वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार ही हमें अर्थात् जनता को अपना और अपने देश का भाग्य निर्धारित करना है और जैसे ही हम यह विचारने लगते हैं, यहीं से समस्या का प्रारम्भ हो जाता है। देश में दलीय प्रणाली है और दलीय प्रणाली में बंधे लोगों को देखें तो सभी अपने दल के सिद्धान्तों की दुहाई देते हैं, अपने को ही सर्वश्रेष्ठ, देशोद्धारक, देशरक्षक, सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय मानते हैं। दूसरे दलों के लोगों को देशद्रोही, समाज का शोषक, पीड़क, दगाबाज, घोटालेबाज, भ्रष्टाचारी और मानवता का हत्यारा बतलाते हैं। और आश्चर्य तो तब होता है, जब कल तक एक दल का प्रवक्ता जो खुलेआम टी.वी. चैनलों पर दूसरे दल की धज्जियां उड़ाता था, अचानक एक दिन दल बदल लेता है, और कल तक जिसकी वकालत अपने शास्त्रीय, ऐतिहासिक-भौगोलिक ज्ञान के आधार पर करता था, आज उसी ज्ञान के सागर से ऐसे रत्न खोजने लगता है, बोलने लगता है, कि-कल तक मैं अज्ञान में था, मोह में था और आज से परम परोपकारी हो गया हूँ। तब विकल्प विहीन, निरीह जनता देखती रह जाती है और अपशब्दों का उच्चारण कर अपनी चिड़-चिड़ाहट को अपने ही जैसे लोगों के बीच दिखाकर मौन हो जाती है और वर्तमान संवैधानिक राजनीति इसी प्रकार चलती रहती है, पिछले सत्तर वर्षों से आगामी अनिश्चित काल तक।

वर्तमान काल के लोकसभा चुनाव में भी राष्ट्र इसी सन्देह और संशय से गुजर रहा है, एक ओर कांग्रेस के नेतृत्व वाला यू.पी.ए. गठबन्धन है तो दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी नेतृत्ववाला एन.डी.ए. गठबंधन है, तीसरी ओर निश्चय-अनिश्चय की पहाड़ी और खाई में चढ़ता-उतरता वामपन्थी नेतृत्व वाला गठबंधन है। दिखाने में ये सभी भिन्न-भिन्न हैं लेकिन सच्चाई के ठोस धरातल पर यदि इन सभी को बिठाकर अपने-अपने सिद्धान्तों की व्याख्या स्पष्ट करने को कहा जाय, और प्रश्न-प्रतिप्रश्न के द्वारा इनकी तर्क सम्मत व्याख्या तक ले जाने का प्रयास किया जाये तो ये सभी लगभग एक ही लक्ष्य की ओर पहुँचेंगे, और उसका नाम है-सत्ता। इस सत्ता की प्राप्ति के लिए चाहे जो भी करना पड़े, उसका कोई नियम नहीं और इसमें कोई भी किसी से पीछे नहीं।

वर्तमान चुनाव के सन्दर्भ में यदि हम देश के प्रचार माध्यमों (मीडिया) पर विश्वास करें, तो लगभग अधिकांश इस आशा को प्रदर्शित कर रहे हैं

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

कि-परिवर्तन होगा और दश वर्षों से शासन कर रहे कांग्रेसनीत गठबन्धन की पराजय और भाजपानीत गठबन्धन की विजय होगी और परिवर्तन होना भी चाहिए। लेकिन साथ ही प्रश्न उठता है कि क्या देशवासियों की आशा और आकांक्षा पूरी होगी? और यह प्रश्न तब और भी गम्भीर हो जाता है, जब हिन्दुत्ववादी विचारधारा पर आधारित होने का दावा करने वाले "परं वैभव" पर राष्ट्र ले जाने की प्रार्थना करने वाले, अनुशासन को ही संगठन का मूल मन्त्र मानने वाले स्वयं सेवक राष्ट्र के वैभव की परवाह छोड़कर अपने पद और प्रतिष्ठा की परवाह तक सीमित हो जाते हैं। क्या हिन्दु विचार धारा का दावा करने वाले यह भी नहीं जानते कि-हमारा मूल वैदिक आश्रम व्यवस्था है और इस आश्रम व्यवस्था से प्राप्त पुरुषार्थ चतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है। और यदि जानते हैं तो क्या राजनीति के लिए किसी आयु का निर्धारण नहीं होना चाहिए? पचास से पचहत्तर के वानप्रस्थ को भी यदि हिन्दु होने के कारण छूट दे भी दी जाय तो कम से कम पचहत्तर के उपरान्त तो विराम होना ही चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य कि-यहां लोग अस्सी-पिचासी पर भी रूकने को तैयार नहीं हैं। अन्तर्द्वन्द्व और अन्तर्कलह का सबसे बड़ा कारण यही आज जनता के सामने खुलकर आ चुका है। हम विश्व की सबसे बड़ी युवा पीढ़ी का दावा करने वाले मृत्युपर्यन्त शासक बने रहना चाहते हैं। फिर प्रश्न उठता है कि-युवाओं का क्या होगा?

आर्यों! आर्याओं! जब तक वैदिक सिद्धान्तों को लागू नहीं किया जाता, तब तक विवाद नहीं मिट सकते, न हिन्दुवादियों के विवाद मिट सकते हैं और न ही आर्य वादियों के। आर्य संगठनों में भी विवाद के मूल में आयु ही है। अत: हम सभी को अभी से इन सिद्धान्तों को प्रतिस्थापित करना होगा, जिससे वर्तमान की समस्याएं भी समाप्त हों और भविष्य में भी समस्याएं उत्पन्न न हों।

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	आर्यसमाज मूर्तिदेवी,छावला बस स्टैण्ड़, नजफगढ़, दि.	01-02 मार्च
2.	संस्कार विद्यापीठ, टिकरी बागपत उत्तर प्रदेश	01-02 मार्च
3.	हिन्द पब्लिक स्कूल, तितावी, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश	08-09 मार्च
4.	ओ.पी.एस. विद्या मंदिर, करनाल, हरियाणा	08-09 मार्च
5.	राजपूत चौपाल, गांव-फरल, कैथल, हरियाणा	08-09 मार्च
6.	आर्य समाज, गांव दादुपुर, करनाल, हरियाणा	15-16 मार्च
7.	आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली	16-17 मार्च
8.	आर्य समाज, करनाल रोड़, कैथल, हरि.	15-16 मार्च
9.	आर्य समाज, गांव-भलेड़ी, मुजफ्फरनगर, उ. प्र.	22-23 मार्च
10.	आर्य समाज श्यौपुर, मध्य प्रदेश	22-23 मार्च
11.	आर्य समाज, जलालपुर, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश	22-23 मार्च
12.	वैदिक गुरुकुल, मधुबनी, बिहार	29-30 मार्च
13.	किठाना पब्लिक स्कूल, गांव-किठाना, कैथल, हरि.	29-30 मार्च
14.	शास्त्री निवास, गांव-पेंगा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	29-30 मार्च
15.	आर्य समाज, कुन्जपुरा, करनाल, हरियाणा	29-30 मार्च
16.	आर्य समाज, थाना भवन, नौजली, शामली, उ. प्र.	29-30 मार्च
17.	आर्यसमाज, हिसार, हरियाणा	29-30 मार्च

आर्या प्रशिक्षण सत्र

1.	ओ.पी.एस. विद्या मंदिर, करनाल, हरियाणा	08-09 मार्च
2.	गांव-मोरखी, जीन्द, हरियाणा	29-30 मार्च

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	आर्य समाज, दुल्हेड़ा, झज्जर, हरियाणा	05-06 अप्रैल	आर्य अशोक	9416865581
2.	आर्य समाज, बड़ौत, उत्तर प्रदेश	05-06 अप्रैल	आर्य सुरेन्द्र पाल	9719540192
3.	गुरुकुल चितौड़ाझाल, मुजफ्फर नगर, उ. प्र.	12-13 अप्रैल	आर्य नरेन्द्र	9719940999
4.	आर्य समाज, घिटोरनी, दिल्ली	12-13 अप्रैल	आर्य बलेश्वर	9313087163
5.	आर्य समाज, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरि.	19-20 अप्रैल	आर्य वेदप्रकाश	9416147217
6.	आर्य समाज भवन, भेल, सेक्टर-1, हरिद्वार, उत्तराखण्ड	26-27 अप्रैल	आर्य विजय पाल	9410395306
7.	सार्वजनिक प्राकृतिक चि॰ यदुवंशी स्कूल, बुचौली रोड़, महेन्द्रगढ़, हरि.	26-27 अप्रैल	डॉ. भंवर सिंह	8683881272
8.	पट्टीदार धर्मशाला, गुरड़िया वर्मा, तह.जावर, जि-सिहोर, मध्य प्रदेश	10-11 मई	आर्य आशीष	8720850615

संध्या काल

चैत्र मास, बसन्त ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(17 मार्च 2014 से 15 अप्रैल 2014)
प्रात: काल: 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

वैशाख मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(16 अप्रैल 2014 से 14 मई 2014)
प्रात: काल: 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

बढ़ो अमरत्व की ओर!

–श्रद्धेय आचार्य परमदेव मीमांसक जी का संदेश

एक पशु जब तक बन्धन में बँधता रहता है, तब तक उसे बन्धन मुक्ति का आनन्द ही नहीं मालूम होता है, जब कहीं भूलवश वह बन्धन से छूटता है और स्वाधीनता की झलक मिलती है तो बड़ा उछल-कूद करता है और पुनः बन्धन में नहीं बंधना चाहता है, यह प्रवृत्ति सिखाती है और बतलाती है कि पशु भी स्वाधीनता प्रिय है, फिर विचारशील मनुष्य को ही क्या हो जाता है कि वह कारा के बन्धन को ही प्रिय समझने लगता है और स्वाधीनता को पाकर भी पराधीनता की चाह करता रहता है। सम्भव है कि वह परिवर्तन से डरता हो कि जो सुख-मान मिल रहा है कहीं यह भी छिन न जाए, परन्तु इसके छिन जाने से ही चाहे वह कोई दूसरा करे या हम स्वयं छोड़ दें, उच्च सुख मिल सकता है। इस सम्भावना से कि कहीं इससे भी छूटकर दुःख में न डूब जाऊँ, वह उच्चतर सुख के लिए भी प्रयास नहीं करता है और यथास्थिति बनाये रखना चाहता है, परन्तु रे मानव! क्या कभी कुछ पल गम्भीरता से विचारा है कि क्या यथास्थिति हमेशा रह पाएगी, यह सम्भव नहीं है क्योंकि बेचारी प्रकृति ही परिवर्तनशील है, अतः लघु सुख मोह को छोड़ो और यथार्थता को समझो तभी इस कारा (जेल) की यथा-स्थिति को छोड़ पाओगे और आगे बढ़ सकोगे, बिना इस कारा को तोड़े किसी जाति ने कभी उन्नति की है? या हम ही करेंगे? अतः इस मोहपाश से अपने को अलग करो, हे आर्यों के उत्तराधिकारी! खतरा मोल लिए बिना आगे बढ़ पाना मुश्किल है; हाँ, जो सुख-मान-स्थिति है वह निम्नतर भी हो सकती है और उच्चतर भी, अतः निम्नतर स्थिति भी हो सकती है इस भय से उच्चतर को प्राप्त ही नहीं करोगे तो समझ लो निम्नतर भी नहीं रहेगी, (परिवर्तनशीलता के कारण) और उच्चतर के लिए आप प्रयत्नशील नहीं, तो स्थिति तो और भी निम्नतर होगी, अतः कोई उपाय अवशेष रहा नहीं, सिवाय इसके कि उच्चतर के लिए प्रयत्न किया जाए। अतः बुद्धिजीवियो! तनिक क्षुद्र अहंपाश से विमुक्त हो इस पर विचार करो, और तोड़ो इस भयानक कारा के बन्धन को और श्वास लो स्वाधीनता का, प्रश्वास लो स्वतन्त्रता का।

ऋषियों ने सभी साधन दिए हैं इस कारा को तोड़ने के, बस केवल आपके चिरनिद्रा को छोड़कर उठने की प्रतीक्षा है। हजारों वर्षों के अन्धतमस के उपरान्त आज से १५० वर्ष पूर्व अपने अन्ध गुरु परन्तु देश की दयनीय दुर्दशा से भिज्ञ-द्रवित-चिन्तित और प्रयत्नशील संन्यासी स्वामी विरजानन्द को समस्त जीवन सौंपने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती जो अपने अनथक पुरुषार्थ, महान प्रज्ञा, समाधि प्रज्ञा, मनुष्य मात्र की उन्नति के आकांक्षी हो, वेद परिज्ञान और ईश्वर की आज्ञा को जन-जन तक पहुँचाते हुए आर्य बनाने के लिए प्रयत्नशील हो ऋषित्व को प्राप्त हुए, उनकी समस्त सम्पत्ति भी हमारे पास है, अब आवश्यकता है बस सम्पत्ति को प्राप्त करने के योग्य उत्तराधिकारी बनने की, परन्तु याद रहे यह भौतिक सम्पत्ति नहीं है जिसको बेच-बेच कर अयोग्य बर्बाद कर देता है और शेष जीवन रोता रहता है और अपने को कारा में जकड़ लेता है।

यह तो बौद्धिक सम्पत्ति है जिसके कारण आर्यों ने इस भूगोल पर करोड़ों वर्ष राज्य किए हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इसको प्राप्त करने के लिए तप और संयम की अनिवार्यता तो है ही। परन्तु कुछ भावुक हृदय आरूढ़ बुद्धि सम्पन्न दुःखी होते हैं, संताप करते हैं कि कथित आर्यसमाजियों (ऊपर से आर्य समाजी परन्तु भीतर से आर्य को छोड़कर सब कुछ) ने तो ऋषि दयानन्द की बौद्धिक सम्पदा को भी घालमेल कर बेच डाला है, बेच रहे हैं और बेच डालेंगे, पहले भी ऋषियों की बौद्धिक सम्पदा में घाल-मेल कर उसको बर्बाद कर दिया और अब सब कुछ आहुत कर 59 वर्ष में इस नश्वर जगत को छोड़ने वाले महामानव की सम्पदाओं में भी सेंध लगानी शुरू कर दी है और लोगों को इससे विमुख कर दिया है।

तो सुनो पूज्यजन्! यह वह बौद्धिक सम्पदा है जो नश्वर की नहीं है, यह तो नित्य देव की है और यह कभी नष्ट नहीं होती है, ऋषिगण तो माध्यम होते हैं उसे व्यक्त करने के लिए, हाँ परिस्थितिवश उसमें कुछ सिद्धान्त को ही जो उसके कालखण्ड में आवश्यक होते हैं व्यापक प्रचार-प्रसार करते हैं, शेष को सामान्य रूप से। यह सामान्य-विशेष उस ऋषि की अपनी बहुत बड़ी देन होती है, अतः पूर्ण विचार कर उस सिद्धान्त को स्वयं धारण कर दूसरों को धारण करवाने की आवश्यकता है; असुर और देव हमेशा रहते हैं, जब देव कम होंगे तो निश्चित ही असुर ज्यादा होंगे क्योंकि ज्यादा देव के कारण ही असुर कम होते हैं और होंगे। अतः दुःख को छोड़ो मान्य जन! सन्ताप अब दूसरों को करने दो, उठो देवों को बढ़ाओ, इसी से असुर कम होंगे, वर्तमान में कोई और अन्य उपाय नहीं है।

उपनिषद् की श्रुति असत्य नहीं कहती है कि उठो, जागो और वरण योग्य वेदाज्ञा को जानकर, दूसरों को जनाओ, पहले स्वयं अज्ञान की कारा से मुक्त हो, पश्चात् दूसरों को भी मुक्त करो। वह क्या दूसरों को बन्धन से मुक्त कर पायेगा जो स्वयं बन्धन में जकड़ा है। अतः तोड़ो अविद्या की कारा को! काटो अन्धविश्वास के पाशों को! मोहनिद्रा को चिरविदाई दो! क्या कारा के बन्धन में महानाश की ध्वनि नहीं सुनाई पड़ रही है! क्या पराधीनता का राग पुनः नहीं गाया जा रहा है। क्या करोड़ों जनों के हृदयों को जोड़ने वाले तन्तुओं के टुकड़े-टुकड़े हो बिखरे नहीं पड़े हैं? क्या आँसुओं से भाग्य को कोसते, सुख के लिए सन्तान को ढ़ोते, क्षुधा ज्वाला की शान्ति में जवानी में ही काया को जर्जरित कर दो बूँद दवाई के लिए सरकारी अस्पतालों की पंक्तियों में खड़े होने में भी अपने को कमजोर पाते हुए अपने आर्यवंशजों पर आपको दया नहीं आती है! क्या आप करुणाहीन तो नहीं हो गए हैं! अपने ही खून इन करोड़ों भाग्यहीनों पर रहम करो! दयालु बनो! और एक ही झटके में अपने कारा को तोड़ डालो, यह बन्धन मुक्तता करोड़ों की रक्षा और सुख का कारण बनेगी। अतः भयभीत न हों, जो भी भविष्य होगा उसे हम मिलकर झेलेंगे। संकोच-आवेश-दम्भ को चिर विदाकर, मुखर-उत्साह धैर्य और सत्य को ग्रहणकर आर्य बनो और कारा को हर प्रकार से तोड़ो, इसे जड़ से काट डालो, यही आप का महाआयास करोड़ों हृदयों के सुप्त तन्त्री के स्पन्दन का कारण होगा और यही गूँज जन-जन में पुनः प्रतिध्वनित हो उन्हें आर्य अर्थात् देव बना देगी। अतः स्वयं के और स्वयं कारा को तोड़ते-तोड़ते यह गूँज भी प्रतिध्वनित करते जाओ-तोड़ो कारा के बन्धन को, बनो देव, फिर.....

युग पुरुष श्रीराम व श्रीकृष्ण

–आचार्या सुमनवती, भिवानी

आर्यावर्त में श्रीराम व श्रीकृष्ण दो ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्हें राष्ट्रपुरुष व इतिहास पुरुष की दृष्टि से अद्वितीय कहा जा सकता है, श्रीराम व श्रीकृष्ण दोनों ही पुरुषोत्तम थे। पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तमपुरुष अर्थात् आर्य। आर्यत्व की दृष्टि से जीवन को उत्तमता की पराकाष्ठा तक ले जाने वाले थे। दोनों महापुरुष अनुकरणीय हैं। जिनसे युग-युगान्तर तक मानव जाति प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी। परन्तु इनकी स्तुति और भक्ति से ओतप्रोत मानव हृदय ने अपनी कल्पनाशील बुद्धि के चमत्कार द्वारा इन दोनों महापुरुषों को इस प्रकार मानवेतर से मानवेतर बना दिया है कि तथाकथित आधुनिक बुद्धिवादी लोग इन दोनों ही महापुरुषों को अनैतिहासिक कहने में अपनी आधुनिकता मानते हैं, परन्तु भारतीय जनमानस ने अपने हृदय के सिंहासन पर इन दोनों ही महापुरुषों को इतने दृढ़ भाव से विराजमान किया है कि उसे अपने घर-परिवार या स्वयं अपने आस्तित्व से भी अधिक इन इतिहास पुरुषों की ऐतिहासिक सत्यता पर आस्था है।

ये दोनों ही इतिहास पुरुष महान स्वप्न द्रष्टा भी थे, दोनों ने अपने सपनों को अपने जीवन काल में चरितार्थ करके भी दिखाया, सामान्य व्यक्ति महान स्वप्न नहीं देखा करते। कभी भूल से या अति उत्साह में आकर सपने देख भी ले तो वो अपनी सीमाओं के कारण व समाज की विपरीत परिस्थितियों के कारण शेख चिल्ली की बातें बनकर रह जाती हैं। पर इन दोनों महापुरुषों के जहां स्वप्न विराट थे वहीं इनके कार्य भी विराट थे और इनके सपनों की पूर्ति भी विराट थी। संक्षेप में कहना हो तो ये कहा जा सकता है कि श्रीराम ने नेपाल के सीमावर्ती प्रदेश मिथिला से लेकर राक्षसाधिपति रावण की लंका तक ठेठ उतर से दक्षिण तक सारे भारत को एकता के सूत्र में आबद्ध किया तो श्रीकृष्ण ने द्वारिका से लेकर मणिपुर तक ठेठ पश्चिम से पूर्व तक सारे भारत को एकता के सूत्र में बांधा और दृढ़ केन्द्र के आधीन करके समस्त राष्ट्र को इतना सुदृढ़ व अपराजेय बना दिया कि महाभारत के पश्चात् लगभग पांच हजार वर्ष तक अनेक विदेशी शक्तियां बार-बार प्रयत्न करके भी इस आर्यावर्त्त को खण्डित नहीं कर सकी। आश्चर्य की बात यही है कि इन महापुरुषों के अन्य अवतार रूपों की चर्चा से जहां ग्रन्थ के ग्रन्थ भरे पड़े हैं वहां इनके राष्ट्रनिर्माता रूप की चर्चा प्रायः नगण्य ही रह गई है। ये हमारी कूपमण्डूकता और मानसिक बौनेपन की निशानी नहीं तो और क्या है। ये दोनों महापुरुष बहुत विराट थे, स्वप्न की दृष्टि से भी और उनकी पूर्ति की दृष्टि से भी।

लेकिन यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि जो श्रीकृष्ण भारतीय धर्म, संस्कृति व जीवन मूल्यों के पुरोधा हैं उस श्रीकृष्ण को पुराणों ने 'चोर-जार शिखामणि' के रूप में चिन्हित किया है। यह केवल पुराणों की लीला है और उसके पीछे व्यक्तिगत वासनाओं की पूर्ति के लिए अवचेतन मन में छिपी हुई मनोग्रन्थियों का काव्यात्मक चोले में विकृत चित्रण मात्र है। यह देश के लिए कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि कृष्ण का वह विकृत रूप तो घर-घर में प्रचलित है लेकिन जो उनका वास्तविक रूप योगेश्वर श्रीकृष्ण है, जो राष्ट्र के लिए अक्षय प्रेरणा स्रोत है वह दुर्लभ है। जैसे श्रीराम को मर्यादा पुरुषोतम कहा जाता है वैसे ही उन्हें योगीराज कृष्ण, योगेश्वर कहा जाता है। उन्हें योगीराज ही क्यों कहा जाए इसका समाधान हम इस प्रकार कर सकते हैं कि वर्तमान युग के उर्द्धता महर्षि दयानन्द ने सदाचार-निर्माणार्थ जिस महापुरुष की गणना सर्वप्रथम की है वह योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं। उन्होंने लिखा है-**श्रीकृष्ण का जीवन आप्त पुरुषों के सदृश है। देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युतम है उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं जिसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्यमत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।** और अब वर्तमान में तो इस भागवत कथा का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि आजकल धार्मिक अनुष्ठान के नाम पर जगह-जगह भागवत कथा वाचन होता है और महापुरुषों का अपमान किया जाता है। विभिन्न टी.वी. चैनलों के माध्यम से कृष्ण लीला दिखाई जाती है जिसमें श्रीकृष्ण के रसिक रूप को ही दिखाया जाता है-कहीं उसे माखन चोर, कहीं कपड़े चोर, कहीं गोपियों के साथ रास लीला करने वाले ईश्वर के अवतार के रूप में दिखाकर जनमानस को भ्रम में डाला जा रहा है और जो श्रीकृष्ण का वास्तविक रूप था उसका कहीं चित्तन नहीं किया जाता।

जब विजयदशमी का त्यौहार आता है तो जगह-जगह रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है और भद्दे, अश्लील गानों पर डांस किया जाता है और जनता का मनोरंजन करके श्रीराम के नाम पर पैसे वसूले जाते हैं, कहीं राम के नाम दे दे-कहकर भीख मांगी जाती है। जिसे मर्यादा पुरुषोतम कहा जाता है उसे भी हमने अपने संकीर्ण स्वार्थ व ओछी मानसिकता के कारण भिखारी बना दिया है। हमने उनके चरित्र के स्थान पर उनके चित्र की पूजा करनी शुरू कर दी है। आज हम राम को तो मानते है, लेकिन राम की नहीं मानते, कृष्ण को तो मानते हैं, लेकिन कृष्ण की नहीं मानते। जिस श्रीराम व श्रीकृष्ण ने पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधा, अपने सिद्धान्तों के बल पर राष्ट्र को संगठित किया, उसे मजबूत व सुदृढ़ नेतृत्व दिया आज वही राष्ट्र विखण्डन के कगार पर खड़ा है, खण्ड-खण्ड बंटने को तैयार खड़ा है। आज आवश्यकता है श्रीराम व श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्र निर्माता की जो इस राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांध सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान करे। श्रीराम व श्रीकृष्ण हमारे श्रेष्ठ पूर्वज थे अर्थात् आर्य पूर्वज थे। वे तो अब रहे नहीं तो क्या किया जाए। इसका उत्तर यह है कि जिन सिद्धान्तों के कारण वे श्रेष्ठ थे, उन सिद्धान्तों को हमें भी अपनाना होगा। जिनके बल पर सबल थे, अजेय थे, स्वाधीन थे, उन सिद्धन्तों को हमें भी अपनाना होगा तभी यह राष्ट्र सुरक्षित रह पायेगा और हम सुरक्षित रह पायेंगे। यदि राष्ट्र सुरक्षित है तो हम सुरक्षित हैं। बिना राष्ट्र की सुरक्षा के हम सुरक्षित नहीं रह पायेंगे। अब हमें राम व कृष्ण के चित्र के स्थान पर उनके चरित्र की पूजा करनी होगी अर्थात् उनके गुणों को अपने जीवन में धारण करना होगा। हमें श्रीराम को मानने के स्थान पर श्रीराम की माननी होगी। श्रीकृष्ण को मानने के स्थन पर श्रीकृष्ण की माननी होगी, तभी हमें सुख, शांति व सुरक्षा मिल सकती है दूसरा कोई उपाय नहीं है।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	15 अप्रैल	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-बसन्त	नक्षत्र-चित्रा
पूर्णिमा	30 अप्रैल	दिन-बुधवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-भरणी
अमावस्या	14 मई	दिन-बुधवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-स्वाती
पूर्णिमा	28 मई	दिन-बुधवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-कृतिका

अनिल आर्या-एक संघर्षशील आर्या नेत्री

आर्य सिद्धान्तों को बहुत से व्यक्ति जानते हैं व मानते हैं, परन्तु यदि आर्य सिद्धान्तों को जीने की बात करें तो आर्या अनिल जी उसका एक उज्ज्वल उदाहरण थी। बहुत पीड़ा हो रही है यह शब्द 'थी' प्रयोग करते हुए। (उनका निधन एक सड़क दुर्घटना में 12 मार्च 2014 को हुआ) काश! यह शब्द मुझे कभी प्रयोग न करना पड़ता, क्योंकि आर्यों का जीवन बहुत कीमती है और दुर्घटनावश और अन्य कारण से किसी आर्य या आर्या के आकस्मितक निधन से सभी को अत्यन्त दु:ख व पीड़ा पहुँचती है। अनिल जी के साथ मेरी जान पहचान तब ज्यादा घनिष्ठ हुई जब हम लोग राष्ट्रीय आर्य राज सभा के लिए पिछले संसद के चुनाव में प्रचार किया करते थे। बहुत उद्यमी व जुझारू आर्या थी। प्रचार में जाने से पहले घर के सभी कार्य समाप्त करके, पारिवारिक उत्तरदायित्वों को पूरा कर लेती थी, प्रचार के दौरान भी हम थक जाते परन्तु उनमें ऊर्जा न जाने कहां से आती थी कि वो हमें बार-बार यही कहती कि एक गांव में प्रचार और कर लेते हैं। हमारा थक कर विश्राम करने का मन करता परन्तु वे चलते रहने को प्रेरित करती थी। इतना उत्साह कि मानों एक ही पल में आर्यों का राज्य स्थापित कर देना चाहती थीं। पूछती थी हमसे-'कब आयेगा आर्यों का राज?' एक ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर एकदम सही तो नहीं दे सकते थे परन्तु हम यही कहते थे-यदि पुरुषार्थरत रहेंगे तो शीघ्र आयेगा। काश! आर्यों का राज देखने तक वो जीवित रहती। आर्यों के साथ दुर्घटना होती है तो उस सर्वशक्तिमान के न्याय पर संदेह होता है परन्तु अल्पबुद्धि मनुष्य उस न्यायकारी के न्याय को कैसे जान सकता है? नियति का निर्णय मानकर स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई उपाय भी तो नहीं है। आर्या अनिल जी ने आर्यसमाज के उत्थान व उसे संगठित करने के अभियान में थोड़े समय में ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए अनथक प्रयास किया व आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के प्रधाना के रूप में अपना कार्य कुशलता के साथ किया। एक महिला के लिए घर को संभालते हुए समाज में कार्य करना इतना सरल नहीं और यही अनेकों आर्याओं के लिए सदा प्रेरणा का कारण बनेगा। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि ईश्वर उनके शोक संतप्त परिवार व समस्त आर्य परिवार को इस शोक से उबरने की शक्ति दे। उनसे अंतिम भेंट दिनांक 09.3.14 को आर्ष गुरुकुल टटेसर जौन्ती दिल्ली के वार्षिकोत्सव के दौरान हुई। किसी सम्मान की आकांक्षा नहीं थी। उन्हें मंच पर आमंत्रित करने पर यह कह दिया कि मैं नीचे ही बैठ जाती हूँ। इतनी सादगी, सरलता व स्पष्टता थी कि कम ही व्यक्तियों में देखने को मिलती है। बार-बार हृदय में पीड़ा होती है और मन इस कटु सत्य को स्वीकार करने को तैयार नहीं है कि वे अब इस दुनिया में नही हैं। -सरोज आर्या, दिल्ली

तुझसे मेरा प्रेम-क्यूँ?

-अशोक आर्य, बाजितपुर, दिल्ली

क्यूँ! करता हूँ मैं तुझसे इतन गहरा प्रेम,
क्या इसलिए,
कि! तू मेरा अपना है,
क्या इसलिए,
कि! जन्मधरा है तू मेरी,
क्या इसलिए,
कि! पिताजी कहते थे,
क्या इसलिए,
कि! पढ़ा है किताबों में,
क्या इसलिए
कि! अन्न-जल से तेरे बुझा रहा हूँ पेट की आग,
क्या इसलिए
कि! तेरे संसाधनो से है वास्ता मेरा,
क्या इसलिए
कि! रहता हूँ घरौंदा बनाकर कमर पे तेरी,
या फिर इसलिए
कि! मेरे पार्थिव शरीर को मिलेगी गोद तेरी,
नहीं भारत!
ये तो गौण कारण हैं सभी,
ऐसी तो अनेकों जरूरतें पूरी करा सकती है,
कोई अन्य धरा भी,
बल्कि ये प्रीती है तो,
इसलिए,
कि! तेरी ही कोख से पैदा हुई मनुष्य की,
पहली खेप,
इसलिए,
कि! तेरे ही हृदय में प्रकाशमान हुआ दुनिया का,
संविधान ''वेद''
इसलिए,
कि! तूने किया सम्पूर्ण धरा पर नीतिगत,
चक्रवर्ती साम्राज्य करोड़ों वर्षो तक,
इसलिए,
कि! तेरे ही राम ने रचा मर्यादा का गौर्वान्वित इतिहास
इसलिए,
कि! तेरा ही कृष्ण बना धर्म संस्थापक,
और इसलिए,
कि! ब्रह्मा से दयानन्द पर्यन्त असंख्य ऋषियों के,
पदचिन्हों से पटा पड़ा है आंचल तेरा।
हे विश्वगुरु ये रहे हैं मूल कारण,
तुझसे मेरे प्रेम के।

गुरुकुल टटेसर का वार्षिकोत्सव

गत् 9 मार्च को सांगोपांगवेद विद्यापीठ आर्ष गुरुकुल का टटेसर-जौन्ती, दिल्ली का वार्षिकोत्सव मनाया गया। यह गुरुकुल इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण वैदिक शिक्षण संस्थान है जिसकी स्थापना 1941 में की गई। क्षेत्र के हजारों व्यक्ति गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए। यह भव्य समारोह प्रात: काल यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ, उसके पश्चात् ध्वजारोहण का कार्य सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् वैदिक राष्ट्र प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। अनेकों विद्वानों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया तथा सभी के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में गुरुकुलीय शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा इस अवसर पर बौद्धिक बल तथा शारीरिक बल का प्रदर्शन किया गया। जहां एक और वेदपाठ हुआ वहीं दूसरी और शारीरिक बल का भी प्रदर्शन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी व गुरुकुल के अनन्य सहयोगी श्री राजपाल विजयरण द्वारा की गई तथा मुख्य वक्ता राष्ट्रीय आर्यराज सभा के अध्यक्ष डॉ विरेन्द्र आर्यव्रत रहे। इनके अतिरिक्त उत्तरी दिल्ली नगर निगम के महापौर, स्थानीय विद्यायक, जिला झज्जर के अनेक गणमान्य समाज सेवी तथा नेतागण भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे तथा गुरुकुल के सहयोग के लिए कृतसंकल्पता दिखाई। अन्त में गुरुकुल के आचार्य श्री हनुमत्प्रसाद के द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया व वैदिक जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज कतलूपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कतलूपुर का 7वाँ वार्षिकोत्सव 23 मार्च को शहीदी दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में हजारों लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रात: काल यज्ञ से हुआ। तत्पश्चात् ध्वजारोहण के बाद आर्य किशोर व किशोरियों द्वारा अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री जगजीत आर्य (आई. ए. एस.) व मुख्य वक्ता आर्य विद्वान् आचार्य परमदेव मीमांसक जी रहे। अन्य वक्ताओं में आर्य नरेन्द्र सिंह, आचार्या इन्दिरा जी व आचार्य सतीश जी ने सम्बोधित किया। मुख्य सम्बोधन के रूप में आचार्य परमदेव मीमांसक जी ने स्वतंत्रता के लिए बलिदान होने वाले युवाओं (भगत सिंह आदि) के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार इन बलिदानियों द्वारा राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए दु:ख व संघर्ष झेला गया उसी प्रकार आज युवाओं को राष्ट्र व समाज के उत्थान के लिए संघर्ष व कष्ट उठाने की आवश्यकता है। बिना इसके राष्ट्र उत्थान सम्भव ही नहीं है। हां, आज अनेकों आर्य युवक व युवतियां इस कार्य में संलग्न हैं जो अन्यों के लिए प्रेरणा कारण हैं। अत: हम सबको आर्य समाज के एकीकरण व राष्ट्र उत्थान के कार्य में अधिक से अधिक संघर्ष व बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए। इस अवसर पर गांव में एक भव्य यज्ञशाला के निर्माण का भी प्रारम्भ हुआ जिसमें अनेक लोगों ने सहयोग दिया। कार्यक्रम के समापन पर आर्य वेदप्रकाश द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया।

लेखमाला–11

डेरावाद : सैद्धान्तिक विश्लेषण

-दयानन्द आर्य, बिठमढ़ा, हिसार

प्रश्न : 80 यह अफसोस हैं कि कुछ शिष्य दीक्षा (नाम-दान) मिलने के बाद इस मार्ग के प्रति लापरवाह हो जाते हैं या भटक जाते हैं। ऐसे शिष्य पूरे-जीवन में व्यावहारिक रूप से कोई उन्नति नहीं कर पाते। भटक जाने पर और अभ्यास की कमी होने के कारण उन्हें नया जन्म दिया जाता है ताकि अगले जन्म में वे उन्नति कर सकें। पृ. 496

टिप्पणी : आपने (पृ. 493) कहा है कि सतगुरु का 'नूरी-रूप' दीक्षा के समय से ही शिष्य के अन्दर समाया होता है और नाम-दान से तुरन्त शिष्य की कर्म-व्यवस्था बदल जाती है; सतगुरु ही उसके कर्मों का स्वामी हो जाता है (प्र. 75, पृ. 363) जब यह कथित नूरी रूप व बदली हुई कर्म-व्यवस्था शिष्य के भटकाव या पतन को भी रोकने में असमर्थ है, तो इसका इतना महिमा-गान क्यों किया गया है; क्यों इनके साथ परमात्मा की सी दिव्यता जोड़ी गई है?

दूसरा, अभ्यास की कमी से अर्थात् आध्यात्मिकता की उच्चावस्था प्राप्त न होने के कारण शिष्य को पुनः नया जन्म दिया जाता है और बकौल आपके उस उच्चावस्था को पाने में 1, 2, 3, 4 जन्म भी लग सकते हैं– तो फिर क्यों 'निश्चित मुक्ति', 'इसी जन्म में मुक्ति', 'जीते-जी मुक्ति जैसे जुमले बार-बार दोहरा कर भ्रम फैलाया जा रहा है? ऐसे दीक्षित शिष्यों के लिए फिर क्यों कहा गया (पृ. 502, 03 पर) कि मृत्यु के बाद उन्हें किसी उच्च मंडल में गुरु के निरीक्षण में उन्नति कराई जाती है। वे तब तक उस सुधार केन्द्र में रहते हैं जब तक वे उच्च-मंडलों में जाने लायक नहीं हो जाते।

अतः "नर-जन्म" और "निश्चित-मुक्ति" (पृ. 502, 503) दोनों में से एक सिद्धान्त निश्चित रूप से झूठा है। ये दोनों पूर्ण-विरोधाभासी होने से दोनों ही सत्य नहीं हो सकते। ऐसे लोग पूर्ण ज्ञानी, सन्त व सच्चे होने का दावा करें और लोग उन्हें स्वीकार भी करें तो फिर ऐसी विडम्बना पर अफसोस प्रकट करने के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है।

और नये जन्म की बात से यह भी सिद्ध हो जाता है कि सब महिमा या परिणाम या कहें फल साधक या व्यक्ति-आत्मा की पवित्रता कर्म या अभ्यास के ही होते हैं। गुरू-आचार्य तो केवल प्रारम्भिक प्रेरणा व मार्गदर्शन मात्र ही कर सकते हैं। अतः अपने ही कथन व सत्य के विरूद्ध केवल अपनी व डेरों की ही महिमा का मण्डन करते रहना इन तथाकथित सतगुरुओं व उनके एंजेटों के स्वार्थ, हठ, अविद्या व दुराग्रह को ही दिखाता है।

प्रश्न : 81 इस साधन के द्वारा शिष्य को अध्यात्म मार्ग पर, एक के बाद एक मुकाम पार कर, अंतिम मुकाम की ओर जाते हुए साधारण मनुष्य के स्तर से ऊपर उठकर सतगुरु की पदवी प्राप्त हो जाती है। पृ. 496

टिप्पणी : आपके कथन से स्पष्ट है कि 'सतगुरुत्व' या सतगुरुपद आपके मार्ग में आध्यात्मिक उपलब्धि का एक स्तर मात्र है और पुरुषार्थपूर्ण साधना या अभ्यास से अर्जित किया जा सकता है। वह सतगुरु ईश्वर का प्रतिनिधि, साकार रूप, विशेष उद्देश्य से भेजी गई अद्वितीय आत्मा नहीं हो सकती, जिसका कि ये डेरे प्रचार-प्रसार कर लाभार्जन करते, स्वार्थ सिद्धि करते हैं।

प्रश्न :82 मृत्यु के बाद किसी गैर दीक्षित को, अगर उसने इच्छा जीवन व्यतीत किया है तो उसे स्वर्ग में भेजा जाएगा। इस प्रकार वह हजारों या लाखों वर्षों तक किसी आनन्द मण्डल में रह सकता है। कर्म-फल समाप्त होने पर उसे फिर इस संसार में, जन्म-मरण चक्र में घूमना पड़ता है...जब तक कि उसके अच्छे कर्म उसे एक देहधारी सतगुरु की शरण में नहीं ले आते-पृ. 502

टिप्पणी : अरे! जब उसने इतने अच्छे कर्म किए कि उत्तम स्वर्ग सुख भी मिला, हजारों नहीं लाखों वर्ष के लिए...तो क्या वे इतने अच्छे कर्म भी उस सम्बन्धित जन्म में उसे सतगुरु से मिलाने को पर्याप्त न थे? जब शराबी, नशेड़ी, पापी, कंगले-ध्यान रहे उनकी, दुर्बुद्धि आदि कष्ट उनके बुरे पूर्व-जन्म कर्मों का ही परिचायक हैं–भी अर्थात् पूर्व व वर्तमान दोनों बुरे कर्मों-युक्त भी उस तथाकथित् सतगुरु से मिल पाते, दीक्षा ले फोकट की मुक्ति या मोक्ष पा जाते, तो इन गैर दीक्षित अच्छे लोगों की मुक्ति या दीक्षा न होने बारे क्या न्यायपूर्ण आधार बाकी रह जाता है? अर्थात् आपका यह सिद्धान्त दलाल या सिफारिश प्रथा का अनुमोदक होने से अनैतिक भी सिद्ध हो जाता है। तीसरे, इससे ईश्वर की न्यायकारिता का गुण-सिद्धान्त खण्डित हो जाता है। अतः यह सिद्धान्त ईश्वर-अनुमोदित न होकर झूठ, स्वार्थ व अविद्या पर आधारित है।

प्रश्न : 83 अपना शरीर त्यागने के बाद सतगुरु जड़ संसार व निचले शूक्ष्म लोकों से ऊपर उठ जाते हैं। वहाँ वे परमपिता द्वारा सौंपे गये कार्यों की जिम्मेदारी संभालते हैं। पृ. 505

टिप्पणी : वाह! यह मुक्ति (मोक्ष) तो गुरु को है जिसमें जिम्मेवारियाँ ही जिम्मेवारियाँ हैं। ये जिम्मेवारियाँ कर्म का ही तो सत्य हैं। क्या अभी-भी इनके कर्म या इच्छाएँ पूरे नहीं हुए?

दूसरा आप (पृ. 503) पर कहते हैं कि सतगुरु खुद की मृत्यु के बाद अपने नाम-दानी शिष्यों को मृत्यु पर लेने या मृत्यु-पूर्व सूचना देने स्वयं पृथ्वी पर आते हैं और साथ ही नीचले-मंडलों में सुधार-गृहों में सम्भालने आते हैं, तो फिर यह सिद्धान्त झूठा हो जाता है कि वे जड़ संसार व निचले शूक्ष्म लोकों से ऊपर उठ जाते हैं...ऐसी मुक्ति तो इनको खुद को है, चेलों का क्या बुरा हाल होता होगा?

प्रश्न : 84 आमतौर पर सतगुरु आम इन्सान जितनी लम्बी उम्र ही भोगते हैं। वे पृ. 505 प्रकृति के नियमानुसार ही चलते हैं। वे सैकड़ों-हजारों साल भी जी सकते हैं; पर क्या लाभ। परमपिता सतपुरुष नहीं चाहता कि उसका 'लाडला-बेटा' जेलखाने के समान इस अंधेर लोक में अधिक समय तक रहे...और वे किसी खास उद्देश्य से ही इस संसार में आते हैं।

टिप्पणी : प्रकृति का नियम आप तब क्यों भूल जाते हैं जब आप कहते है। (पृ. 503) कि सतगुरु जो चाहे कर सकते हैं और कोई उनके मार्ग में बाधा नहीं खड़ी कर सकता। सैकड़ों-हजारों साल के दावे को छोड़िये, 150-150 वर्ष क्यों नहीं जिन्दा रहते-यह तो प्रकृति-उल्लंघन भी नहीं है। और रही बात खास उद्देश्य की-क्या गृहस्थ, सन्तानोत्पत्ति आदि कर्म भी खास उद्देश्य हैं तथाकथित सतगुरुओं के लिए? ब्रह्मचर्य, तप-संयम की जिन्दगी जी कर दिखाओ तो जरा? कभी आप ईश्वर का साकार रूप बन जाते, कभी उसके प्रतिनिधि, मैनेजर-अब लाडले पुत्र बन बैठे?....प्रश्न यह है कि परमात्मा का लाडला-पुत्र किस पाप की सजा भुगतने को इस अधियारे-जेलखाने (पृथ्वी) में आता है?

क्या यह निश्चित नियम नहीं है कि जन्म-मरण के चक्र में केवल वे आत्माएँ रहती हैं जिनके कर्मों में थोड़ा या ज्यादा पाप-कर्म भी कुछ अंश तो अवश्य होता है। अतः एक पापी आत्मा ईश्वर का साकार रूप कैसे हो सकती, उसका प्रतिनिधि, लाडला-पुत्र कैसे स्वीकारी जाए?...और इन लोगों ने कैसे सोच लिया कि इनके गपोड़े पकड़ में न आवेंगे?

प्रश्न :85 मानव जाति के पतन को रोकने के लिए सतगुरु क्यों नहीं कुछ करते? इसका उत्तर यह है कि सतगुरु प्रकृति की व्यवस्था में कोई दखल नहीं देते। पृ. 507

टिप्पणी : क्या पतन प्रकृति की व्यवस्था है? यही हाँ, तो दुःख, मुसीबतें भी प्रकृति की व्यवस्था हुई। जब आप ने 'मुसीबतों से छुटकारा' (मोक्षादि) का काम अपने ऊपर ले लिया तो यह भी तो प्रकृति की व्यवस्था में दखल हुआ, कि नहीं?.. ..अतः यह बहाना आपने अपनी अयोग्यता को छुपाने मात्र को ही किया है।

और जो प्रकृति की व्यवस्था में दखल नहीं, तो आप क्यों झूठा दावा करते (प्र.22, पृ.54) कि सतगुरु के वश में कुदरत की मशीन। वे इन शक्तियों के मालिक हैं, इत्यादि। क्या स्वयं मालिक द्वारा मशीन का प्रयोग या उपयोग प्रकृति का उल्लंघन है? अतः यह निश्चित है कि आपने यहाँ या वहाँ (प्र. 22) एक जगह झूठ अवश्य बोला है।

क्रमशः

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

इस सत्र में आने से पहले मुझे अपने समाज तथा अपने अन्दर की बुराईयों तथा अवगुणों का ज्ञान नहीं था। मुझे इन दो दिनों में जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसे चाहता हूँ कि हर उस व्यक्ति को पता होना चाहिए जो देश और अपने आप को जानना चाहता है तथा उसका हर प्रकार से सहयोग करूँ तथा उन्हें इस अव्यवस्थित समाज को एक व्यवस्थित समाज बनाने में मदद तथा उनकी बुद्धि को ज्ञान से प्रकाशित करने का प्रयास करूं तथा मैं चाहता हूँ कि आज जो पीढ़ी नशे के मार्ग पर चलती जा रही है उसे सही रास्ता दिखाने में उनकी मदद करूं, इस आर्यावर्त में सब खुशी से रहें तथा सभी अपनी इस मातृभूमि को बचाने में अपना योगदान दें तथा इसे एक उत्तम देश आर्यावर्त बनायें।

और व्यक्तियों को भी आर्य और आर्यावर्त के बारे में बता कर तथा आर्य बनने में उनकी मदद कर के। और अपने मन कर्म तथा धन से आर्य तथा आर्यावर्त बनाने में सहयोग देना।

आर्य परमजीत सिंह, आयु-28 वर्ष, योग्यता- एम.ए.
कार्य- अध्यापन, नांगल ठाकरान, दिल्ली

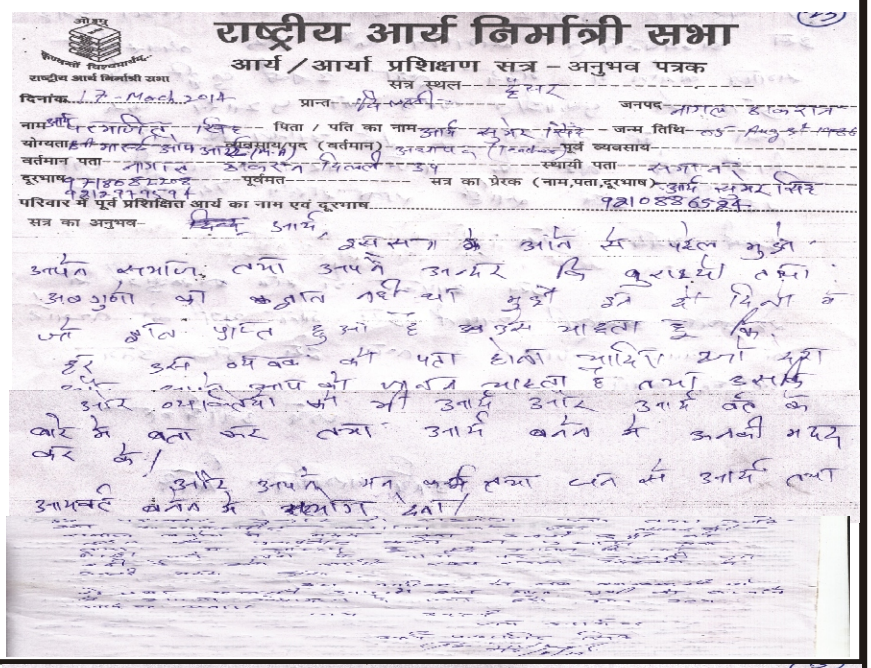
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र – अनुभव पत्रक

बड़े ही सुखद हृदय के साथ लिख रहा हूँ कि 33 वर्ष की लम्बी अवधि के बाद ज्ञात हुआ कि मैं हिन्दु नहीं बल्कि आर्य हूँ और 2 दिन का सत्र करके अनुभव हुआ की हमें आर्य होने पर गर्व होना चाहिए और प्रेरणा मिली कि हमें सभी भारतीयों को आर्य और आर्या बनाना है। और अपने देश की मातृ-भूमि को फिर से आर्यावर्त बनाने में तन-मन और धन से इसको अपना लक्ष्य बनाऊगां और निरन्तर प्रयासरत रहूंगा और पुरुषार्थ करूंगा।

इस राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के महान कार्य में मैं तन-मन-धन से सहयोग दूंगा तथा दूसरों को प्रेरित करूंगा

आर्य दिनेश कुमार, आयु-33 वर्ष, योग्यता-स्नातक
खरखौदा सोनीपत, हरियाणा

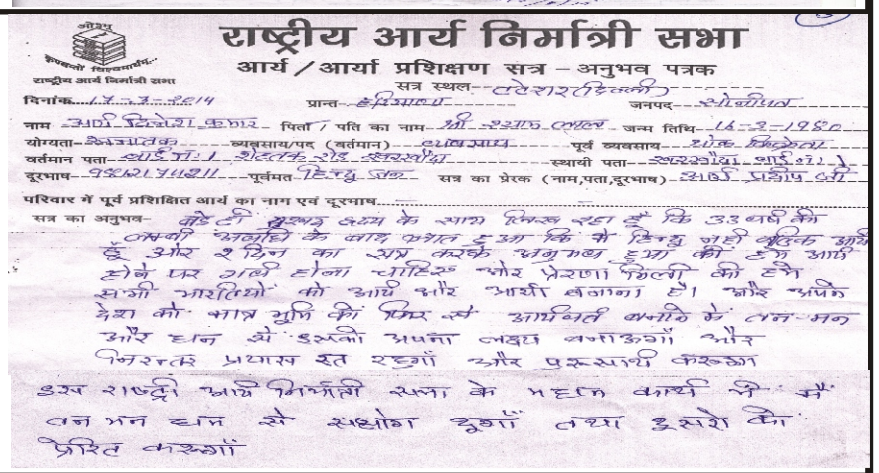
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र – अनुभव पत्रक

मुझे इस सत्र में आने का बड़ा सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं पहले आर्य समाज गुरुकुल का छात्र रहा हूँ और वेदों की महिमा को जानने के उद्देश्य से मैं इस संस्कृत भाषा से जन्म से ही जुड़ा हुआ हूँ। आर्य सामाजिक मूल्यों व वैदिक तथ्यों की अच्छी जानकारी के साथ-साथ मैं अपने देश की वर्तमान परिस्थितियों से परिचित हुआ हूँ। इस सत्र से एक बहुत बड़ा अभियान लेकर मैं चला हूँ, जिसके लिए मैं आर्य सभा के लिए निरन्तर कार्य करता रहूँगा।

मैं इस आर्य-निर्माण के महान् कार्य में सहयोग के लिए यथासामर्थ्य तत्पर रहूँगा।

संदीप कुमार आर्य, आयु-29 वर्ष, योग्यता-शास्त्री
पद- संस्कृत शिक्षक, गांव मटिण्डू, सोनिपत हरियाणा

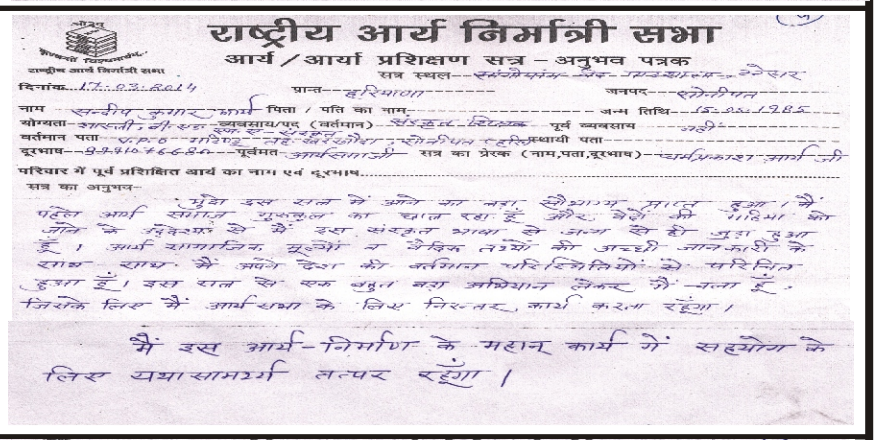
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र – अनुभव पत्रक

पहले मैं सोचता था कि जीवन अपने लिए ही जी रहा था। अपना परिवार अपने लोगों के बारे में ही सोचता था। दो दिन का सत्र करने के बाद अपने हिन्दू भाईयों के लिए कुछ कर सकता हूँ। पहले मैं कुछ मानता ही नहीं था कि देश क्या है? धर्म क्या है? केवल अपने ही बारे में सोचता था। अब सत्र में जाने से मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है। मेरे जीवन का उद्देश्य क्या हो, अपने भाईयों के लिए अब कुछ करना है आज से मैं उनको भी वही रास्ता दिखाने के लिए तैयार हूँ जो आज मैंने जाना है। कभी भी अधर्म के रास्ते पर नहीं चलूंगा। आज से मैं प्रण करता हूँ कि मैं सच्चाई का ही साथ दूंगा। मेरा एक दोस्त मिला जो आर्यसमाज से जुड़ा है। उनकी वजह से आज मैं इतनी बड़ी जानकारी से परीचित हुआ हूँ। उन्होंने मुझे रास्ता दिखाया है कि इस रास्ते पर का क्या लाभ है अगर वो मुझे नहीं मिलते और मुझे यहां नहीं लेकर आते तो मैं जीवन भर भटकता रहता और बाकी की जिन्दगी बर्बाद कर देता। आज मैंने देश के बारे में जाना है कि देश की हालत इतने खराब हैं अब देश के लिए कुछ करना चाहता हूँ। और पुरूषार्थ करूंगा कि और को भी इस विद्या से परीचित कराऊं। अब आज से जहां-कहीं भी सत्र लगेगा, मैं औरों को भी सत्र में लेकर आऊँगा। मेरे प्रेरणा स्रोत जो मुझे यहां लेकर आए, वे नवीन आर्य है कतलूपुर से ।

कैलाश आर्य, आयु-24 वर्ष, योग्यता-मिडिल
पद- गौरक्षक, गौशाला हरेवली, दिल्ली

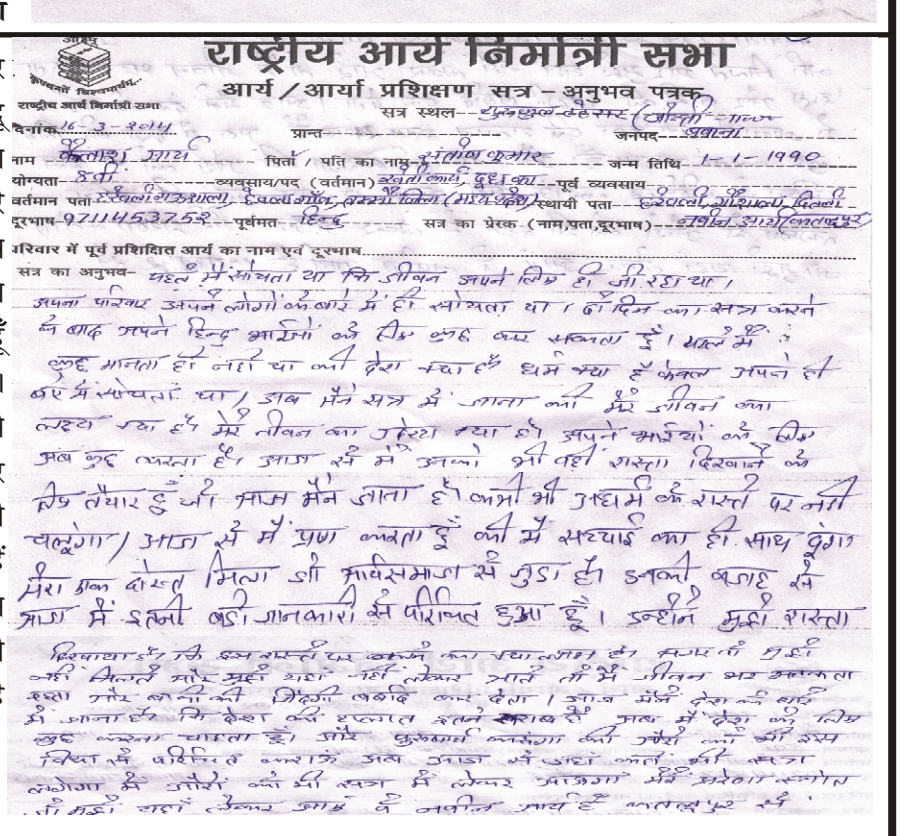
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र – अनुभव पत्रक

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह-9 मार्च 2014

आर्य समाज, लक्ष्मी पार्क नांगलोई के प्रथम वार्षिकोत्सव (16 मार्च) में आर्य सत्यकाम (प्रधान-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), आचार्य सतीश जी, आर्य यशपाल (मंत्री- आर्य समाज नांगलोई) व कृष्ण लाल आर्य (प्रधान-आर्य समाज लक्ष्मी पार्क, नांगलोई)

आर्य प्रशिक्षण सत्र (08-09 मार्च) गांव-तितावी, मुजफ्फर नगर, उ. प्र., में आचार्य यशवीर जी व आर्य कुंवर पाल जी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।